

उत्तर प्रदेश डायबिटिक एशोसियेशन के 15वें अधिवेशन में
महामहिम राज्यपाल, श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन

(दिनांक-01.10.2016, समय-6:30 बजे दिन)

उत्तर प्रदेश डायबिटिक एशोसियेशन के 15वें अधिवेशन में प्रमुख रूप से उपस्थित डॉ. प्रहलाद चावला जी, डॉ. दीपक अग्रवाल जी, डॉ. नवीन सोनी, डॉ. डोगरा जी, डॉ. अनुज महेश्वरी जी, डॉ. आर.आर. सिंह जी, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव जी, संस्था के अन्य सभी पदाधिकारीगण, सदस्यगण, उपस्थित बुद्धिजीवीगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!

‘उत्तर प्रदेश डायबिटिक एशोसिएशन’ के 15वें अधिवेशन में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। इस अधिवेशन की सफलता हेतु आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। मेरा विश्वास है कि सम्मेलन में देश भर से आये हुए मधुमेह रोग के जो चिकित्सक भाग ले रहे हैं, उनके बीच होने वाले विचार-मंथन से मधुमेह के रोगियों की चिकित्सा के नये मार्ग प्रशस्त होंगे।

आज के आधुनिक परिवेश में सभी देशों में, विशेषकर भारत में मधुमेह के रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है और इसकी रोकथाम हेतु सार्थक प्रयास किये जाने जरूरी हैं। ‘उत्तर प्रदेश डायबिटीज एसोसिएशन’, जिसका गठन लखनऊ में के.जी. मेडिकल विश्वविद्यालय के मेडिसीन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.आर. सरकार की अध्यक्षता में लगभग 16 साल पहले किया गया था, अभी करीब 1200 से ज्यादा मधुमेह चिकित्सक इसके सदस्य हैं। यह तथ्य पुराना पड़ चुका है कि डायबिटीज हमारे तैलीय एवं पौष्टिक खान-पान एवं शारीरिक

शिथिलता आदि गड़बड़ियों से उपजा रोग है। किन्तु, आज तो समाज के कमजोर वर्ग, जिनका खान-पान अत्यन्त सामान्य किस्म का है, भी मधुमेह और हृदय रोग जैसी बड़ी बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। और तो और, काफी छोटी उम्र के बच्चे भी मधुमेह से पीड़ित हो रहे हैं। ऐसे में मधुमेह रोग के वास्तविक कारणों को लेकर आप चिकित्सकों को गहन रूप से चिंतन-मनन करना होगा। ये सभी रोग चिकित्सकीय भाषा में 'हमपदह क्पेवतकमते' कहे जाते हैं। इसका अर्थ है कि इनसे ग्रसित व्यक्ति समय पूर्व ही वृद्ध हो रहे हैं। मधुमेह जैसे रोग भारत जैसे युवा राष्ट्र के लिए अत्यन्त खतरे का संकेत है। भारत की आबादी के 70 प्रतिशत व्यक्ति युवा हैं। इसीलिए इसे 'युवा राष्ट्र' भी कहा जाता है। किन्तु मधुमेह जैसे रोग से 'एजिंग' अर्थात् असमय-वृद्ध होते जाने की समस्या बढ़ती जा रही है।

आज जिन्दगी की आपा-धापी और रोज-रोज की भाग-दौड़ के कारण मनुष्य को शारीरिक और मानसिक क्षति हो रही है। इन समस्याओं से निबटने में-योग और व्यायाम- दोनों हमारी भरपूर मदद करते हैं। योग से हमारा हृदय और मस्तिष्क दोनों स्वस्थ, संतुलित और आनंदित रहता है, जबकि व्यायाम शारीरिक तौर पर हमें स्फूर्ति और ताजगी से परिपूर्ण बनाये रखता है। योग और व्यायाम-ये दोनों हमारे देश और संस्कृति की अपनी चीजें हैं, जिनको आज पूरा विश्व और आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान भी स्वीकार करता है। आज आवश्यकता है कि हम योग और व्यायाम को अपनी दिनचर्या में शामिल कर मधुमेह और हृदय रोग सहित अन्य विभिन्न घातक बीमारियों से अपने प्राणों की रक्षा करें।

वास्तव में, शारीरिक रोगों से भी अधिक मानसिक तनाव व अवसाद आज बुढ़ापे का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। जो व्यक्ति

जितने अधिक तनावों से गुजरता है, उस पर उम्र का उतना ही अधिक प्रभाव होता है। कुछ प्रचलित जुमले हैं कि 'ये बाल धूप में थोड़े ही सफेद किये हैं।' यह जीवन के उतार-चढ़ाव व संघर्ष का परिणाम है। यह संघर्ष सदा हमारे ऊपर थोपा ही नहीं जाता, वरन् आज हम इसे स्वयं भी निमंत्रित करते हैं। कारण है, शीघ्रातिशीघ्र बड़ा व समृद्ध बनने की आकांक्षा। हम प्रतीक्षा नहीं कर सकते। सब कुछ हमें बहुत जल्दी पाना है। समझने की बात है कि यदि गाड़ी को हवा की तरह दौड़ाएँगे तो दुर्घटना की सम्भावना तो बढ़ेगी ही।

सफलता के अपने आधुनिक पैमानों से हमने न जाने कितने युवाओं को अवसाद के गड्ढे में ढकेल दिया है। हम जानते हैं कि हर व्यक्ति कुछ अलग क्षमताएँ रखता है, जो वास्तव में उसकी अपनी विशेषताएँ होती हैं। आवश्यकता है कि सबके लिए एक समान पैमाना बनाने के स्थान पर, विभिन्न व्यक्तियों में उनकी भिन्न-भिन्न क्षमताओं को उभारा जाये, जिससे वह जीवन में प्रसन्नता एवं आत्मविश्वासपूर्वक दृढ़ता से खड़े हों सकें। वे निराशा एवं अवसाद जनित रोगों से बच सकें।

इस अधिवेशन के प्रस्तावित विषयों में मैंने पाया कि डिप्रेशन का डायबिटीज पर प्रभाव एवं यहाँ तक कि ऐन्टीडिप्रेसेन्ट दवाओं से उत्पन्न होने वाले दुष्परिणामों पर भी यहाँ चर्चा होनी है। मैं आशा करता हूँ उपस्थित चिकित्सकगण इस पर गंभीरता से विचार करेंगे कि ऐसा न हो कि रोगी को एक गड्ढे से निकालते हुए हम अनजाने में उसे दूसरी बड़ी खाई में ढकेल दें।

शांतिकुंज हरिद्वार के संस्थापक विद्वान एवं मनीषी संत श्री राम शर्मा 'आचार्य' का कथन है कि "मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं वरन् निर्माता है। आवश्यकता है अपने मानस को सशक्त एवं सबल बनाने की"। एक सबल मन एवं शरीर रहने पर, डायबिटीज हमारी ओर अपनी

कुदृष्टि डाल नहीं पायेगी। हम मधुमेह से बचकर पूर्णतः स्वस्थ रहेंगे। कहा भी गया है 'एक तन्दुरुस्ती हजार नियामतें।' अगर हम शरीर व मन से तनदुरुस्त रहें, तो हम सभी बाधाओं से स्वतः ही निबट लेंगे।

मैं एक बार पुनः इस सम्मेलन की सफलता की शुभकामना करते हुए आप सबों को धन्यवाद देता हूँ।

जय हिन्द!

.....

प्रस्तुति—जन—सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।